चन्द्रशेखराष्टकम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्॥

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृङ्गनिकेतनं, शिँजिनीकृत पन्नगेश्वरमच्युताननसायकम्।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिनन्दितम्।
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं, दक्षयज्ञ विनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्ति मुक्ति फलप्रदं सकलाघसङ्घनिवर्हणम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं, सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम।
सोमवारिण भूहुताशनसोमपानिलखाकृतिम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

विश्वसृष्टिविधायिणं पुनरेव पालनतत्परं, संहरन्तमपि प्रप्ञ्चमशेषलोकनिवासिनम्।
क्रीड़यन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितम्
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः॥

–मार्कण्डेय पुराण

ताथैया ताथैया नाचे भोला बं बब बाजे गाल॥
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे दुलिछे कपाल माल॥
गरजे गङ्गा जटामाझे उगरे अनल त्रिशूल राजे
धक् धक् धक् मौलि बन्ध ज्वले शशाङ्क भाल॥

–स्वामी विवेकानन्द

बं बं बं हर हर ॥
वृषभवाहन विशालबदन त्रिपुरनाशन ईश्वर ॥
पादकमल शोभेशतदल त्रिनयन आचे शोभित भाल
गले विलम्बित हाड़माल जय जय शिव शङ्कर ॥

–गिरीश्चन्द्र घोष

शिव शिव शिव शिव नाम सुमर नर सकल मनोरथ पूरणकारी ॥
रावण नाम् लियो दृढ़ मनसे सकल देव आज्ञा सिरधारी ॥
नन्दीगण जब सुमरन कीनो कालपाश तत्काल निवारी ॥
उपमन्यु मुनि करे तपस्या दूधसमुद्र कियो बड़भारी ॥
ब्रह्मानन्द यहि वर मांगे भक्तिदान दोजे त्रिपुरारी ॥

–ब्रह्मानन्द

डमरु हर कर बाजे बाजे ॥
त्रिशूलधर अङ्गभस्म भूषण व्यालमाला गले विराजे ॥
पञ्चवदन पिनाकधर शिव बृषभवाहन भूतनाथ
रूण्ड मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर रे ॥

–बिहारिलाल दुवे

हर हर हर भूतनाथ पशुपति ॥
योगिश्वर महादेव शिव पिनाकपाणि ॥
ऊर्ध्व ज्वलत जटाजाल नाचत व्योम्केश भाल
सप्त भुवन धरत ताल टल मल अवनी ॥

–स्वमी विवेकानन्द